Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

बड़वानी जिले के परिप्रेक्ष्य में भारत छोड़ो आंदोलन

डॉ. मधुसूदन चौबे*

* सह-प्राध्यापक (इतिहास) प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस, शहीद भीमा नायक शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बड़वानी (म.प्र.) भारत

शोध सारांश – आधुनिक भारत के इतिहास में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध हुए भारत छोड़ो आन्दोलन का महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के माध्यम से संचालित किये गये गय इस आंदोलन की घोषणा 8 अगस्त, 1942 को बॉम्बे में महात्मा गांधी ने की और 'करो या मरो' का संदेश दिया था। 9 अगस्त को प्रारंभ हुए इस आन्दोलन का प्रसार देश के प्रत्येक हिस्से में हुआ। इसमें वर्तमान बड़वानी जिला क्षेत्र भी सम्मिलित है। ऑपरेशन जीरो अवर के अंतर्गत अंग्रेजों ने अधिकांश बड़े राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर लिया था, अत: यह स्वस्फूर्त जन आंदोलन में रूपांतरित हो गया।

बड़वानी जिला क्षेत्र में भी उस दौरान अनेक गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी सक्रिय रहे। स्वाधीनता आंदोलन में जनसहभागिता का यह एक प्रमुख उदाहरण है। इस क्षेत्र के संघर्षकर्ताओं के नाम आज़ादी की लड़ाई के राष्ट्रीय नायकों में शामिल नहीं हैं, जबकि इनका योगदान किसी भी दृष्टि से कम नहीं है। इन्होंने अंग्रेजों के अमानुशिक अत्याचार सहे हैं। यातनापूर्ण जेलयात्राएँ की हैं। बड़वानी जिला भारत छोड़ो आंदोलन का निमाड़ क्षेत्र में एक बड़ा केन्द्र रहा है।

इस शोध पत्र में बड़वानी जिले के परिप्रेक्ष्य में भारत छोड़ो आंदोलन के प्रमुख आयामों का विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

शब्द कुंजी – आधुनिक भारत, साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, क्षेत्रीय नायक, निमाड़, जन-आंदोलन, ऑपरेशन जीरो अवर।

शोध कार्य के उद्देश्य :

1. भारत छोड़ो आंदोलन के संबंध में राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में वर्तमान बड़वानी जिले के योगदान का आकलन करना।
2. भारत छोड़ो आंदोलन के बड़वानी क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को मूल्यांकित करना।

शोध पद्धति – इस रिसर्च पेपर को तैयार करने के लिए निम्नानुसार शोध पद्धति अपनाई गई है :

1. सर्वप्रथम बड़वानी क्षेत्र के स्वतंत्रता सेनानियों की प्रामाणिक एवं समग्र सूची तैयार की गई। यह सूची जिला प्रशासन में उपलब्ध दस्तावेजों और अन्य स्थानों से प्राप्त किये जाने वाले दस्तावेजों से तैयार की गई।
2. स्वतंत्रता सेनानियों के वंशजों, रिश्तेदारों और परिचितों से संपर्क कर दस्तावेज और अन्य जानकारी प्राप्त की गई।
3. द्वितीयक स्रोत के रूप में गजेटियर, लेख, समाचार पत्र, पत्रिकाओं और आधुनिक भारतीय इतिहास के ग्रंथों का उपयोग किया गया।

शोध क्षेत्र बड़वानी जिले का परिचय – प्रशासनिक दृष्टि से 25 मई, 1998 को खरगोन जिले से पृथक होकर बड़वानी जिले का निर्माण किया गया, जिसमें 8 तहसीलें बनाई गयीं। जिले के उत्तर में पुण्य सलिला नर्मदा बहती है। बड़वानी जिला मध्यप्रदेश के दक्षिण-पश्चिमी छोर पर स्थित है। भौगोलिक दृष्टि से यह जिला सर्वाधिक विषमता वाला क्षेत्र है। कहीं विन्ध्य और सतपुड़ा की उत्तुंग पर्वत श्रेणियाँ है, जो कहीं मैदानी भाग है। बड़वानी जिला 21 अंश 37 मिनिट से 22 अंश 22 मिनिट उत्तरी अक्षांश 74 अंश 27 मिनिट से 75 अंश 30 मिनिट पूर्वी देशान्तर में 74 में स्थित है। जिले का कुल क्षेत्रफल 5427 वर्ग किलोमीटर है। यहां की जनसंख्या लगभग पन्द्रह लाख है।

भारत छोड़ो आंदोलन का परिचय – अंग्रेजों की पराधीनता के विरुद्ध भारत में राष्ट्रवाद का विकास हुआ तथा भारतीय प्रतिरोध का सूत्रपात 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में व्यापक स्तर पर हुआ। 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। कांग्रेस के नेतृत्व में उदारवादी, उग्रवादी और गांधीवादी युगों के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम संचालित हुआ। गांधीवादी युग में तीन बड़े आंदोलन हुए, उनमें भारत छोड़ो आंदोलन भी शामिल था।

अप्रैल, 1942 में गांधी जी ने भारत छोड़ो आंदोलन पर गंभीरतापूर्वक सोचना शुरू किया। गांधी जी की दृष्टि में भारत छोड़ो आंदोलन ही एकमात्र हल दिखाई देने लगा था। वस्तुत: क्रिप्स मिशन के प्रस्तावों के असफल होने के बाद यह विचार एकदम पैदा हो गया और विकसित भी होता रहा।

14 जुलाई, 1942 को वर्धा में कांग्रेस कार्य समिति की बैठक में गाँधी जी ने 'भारत छोड़ो आंदोलन' का समर्थन किया। 7 अगस्त, 1942 में बंबई के अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में लगभग 20 हजार व्यक्ति शामिल हुए थे। 8 अगस्त, 1942 को काफी विचार-विमर्श के बाद 'भारत छोड़ोय प्रस्ताव पास हो गया।' गांधी जी ने इस अवसर पर एक युगान्तरकारी भाषण दिया। इन्द्र विद्यावाचस्पति का कहना था कि-'गांधी जी उस रात ऐसे बोल रहे थे मानो उनकी अंतर्रात्मा से भगवान बोल रहा हो।' सरकार ने दमन का हथकंडे के रूप में प्रयोग करते हुए 9 अगस्त, 1942 को गांधी जी और उनके अनेक सहयोगी कांग्रेसी नेताओं को गिरफ्तार कर लिया। शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर अनेक स्थानों पर गोलियाँ चलायी गयी। अनेक

सरकारी इमारतें जला दी गयीं। रेल की पटरियों को उखाड़ दिया गया एवं टेलीफोन के तार काट दिये गये। दमन की कार्रवाई के फलस्वरूप अनेक रेलगाड़ियाँ बंद कर दी गयीं। हजारों स्थानों पर मजदूरों ने और किसानों ने हड़तालें कीं, जिस पर जनता ने भारी अर्थदण्ड लगाया। सरकार ने गांधी जी को इन सब कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया। 10 फरवरी, 1942 को गांधी जी ने उपवास शुरू किया। भारत में भी देशवासियों के हृदय में ब्रिटिश शासन के कार्यों से क्षोभ उत्पन्न हुआ। 21 दिन के उपवास के बाद सन् 1942 को बीमार अवस्था मे उन्हें जेल से रिहा कर दिया गया। इस आंदोलन ने भारत की स्वतंत्रता को बहुत निकट ला दिया।

बड़वानी जिले में भारत छोड़ो आंदोलन – बॉम्बे से प्रारंभ होकर भारत छोड़ो आंदोलन वर्तमान बड़वानी जिला क्षेत्र में भी पहुंचा। बड़वानी जिला क्षेत्र में भी उस दौरान अनेक गांधीवादी स्वतंत्रता सेनानी सक्रिय रहे। श्री मीठूलाल जैन, श्री शिवनाथ प्रसाद गुप्ता, श्री रामरतन शर्मा श्री बाबूलाल सोनी, श्री प्रभुदयाल चौबे, श्री घनश्याम मुवेझा, श्री दयाराम घोडे, श्री सूरजमल लुक्कड़, श्री धन्नालाल कालुसा, श्री नत्थुप्रसाद पटेल, श्री रामचंद्र कुमरावत, श्री काशीनाथ त्रिवेदी, श्रीमती कलावती बाई पति काशीनाथ त्रिवेदी, श्री नारायण परसाई, श्री मंशाराम वर्मा, श्री नारायण सोनी, श्री मंगल प्रसाद श्रीवास्तव एवं श्री दशरथ सोनी का नाम बड़वानी जिले के कलेक्टर कार्यालय में भारत छोड़ो आंदोलन के सेनानी के रूप में दर्ज है। इनके अलावा श्री नारायण चौबे जैसे अनेक व्यक्तित्व हुए, जिन्होंने आज़ादी के लिए प्रयास किया।

बड़वानी में राष्ट्रीय स्वाधीनता की जागृति का श्रेय श्री नत्थुप्रसाद पटेल, श्री मशांराम वर्मा, श्री नर्मदा प्रसाद चतुर्वेदी, श्री राजीव लोचन पानवाला, श्री महेन्द्र नागर, श्री काशीनाथ त्रिवेदी, श्री विश्वनाथ खेड़े आदि स्वतंत्रता प्रेमियों ने अपने प्रयत्नों से और प्रेरणा से भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया था।

1. **सेवादल की स्थापना–** 1928 में श्री नत्थुप्रसाद पटेल ने श्री राजीव लोचन पानवाला आदि के साथ राजघाट बड़वानी में सेवादल की स्थापना की। इस दल ने बड़वानी की जनता में आज़ादी के लिए संघर्ष करने के लिए आन्दोलन की शुरूआत की। बड़वानी की जनता में उनका यह कार्य स्वतंत्रता की जागृति का एक महान कार्य था। उन्होंने अंग्रेजी सत्ता की दमनकारी प्रवृत्ति के विरुद्ध अहिंसात्मक आंदोलन किया। अंग्रेजी शासन के दमन स्वरूप संग्राम सेनानियों ने भारी अत्यचार और यातनाओं को सहन किया था। स्वतंत्रता सेनानियों ने गाँव–गाँव भ्रमण कर गांधी जी के भारत छोड़ो आंदोलन को सफल बनाने के लिए जी–तोड़ मेहनत की।

2. **प्रजामंडल का गठन –** सन् 1938 में बैजनाथ जी और विश्वनाथ खोड़े की प्रेरणा से सेंधवा में प्रजामंडल का गठन किया। प्रजामंडल गठन के प्रमुख कार्यकर्ता दशरथ सोनी, रामरतन शर्मा, प्रभुदाल चौबे के अतिरिक्त स्वतंत्रता प्रेमी अनेक नवजवानों ने प्रजामण्डल की गतिविधियों में भाग लिया।

सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में श्री रामरतन शर्मा ने प्रजामण्डल की गतिविधियाँ संचालित करते हुए नेतृत्व संभाला। 18 अगस्त, 1942 को संपूर्ण सेंधवा की जनता को संगठित किया गया और जगह–जगह आमसभाएँ आयोजित की गई। जनता ने इसमें काफी उत्साह से भाग लिया और भारत छोड़ो आन्दोलनों को सफल बनाने के लिए स्वतंत्रता प्रेमियों ने काफी परिश्रम किया।

3. **लोक परिषद की स्थापना–** श्री काशीनाथ त्रिवेदी ने अपने प्रयत्नों ने राज्य लोक परिषद् की स्थापना की थी जिसके अन्तर्गत समाज सेवा के रूप में हरिजन सेवा प्रारंभ की ताकि जनजीवन में जातिगत भेदभाव को निर्मूल करना था।

4. **विदेशी वस्त्रों की होली जलाना–** वर्तमान अंजड़ तहसील में भारत छोड़ो आंदोलन के प्रभाव में नौजवानों ने उत्साहपूर्वक विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। युवकों ने ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ने के लिए जनजागृति की भावना जनता में भरी। देशभक्त युवकों ने सामूहिक प्रयास से विदेशी वस्तुओं की बिक्री बंद करवा दी। घर–घर जाकर विदेशी वस्त्र इकट्ठे किये और उन्हें सामूहिक रूप से जला दिया गया।

5. **जुलूसों एवं सभाओं का आयोजन –** श्री रामरतन शर्मा ने 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन का नेतृत्व किया था। प्रतिदिन जुलूस निकालना, शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करना, गाँव–गाँव में घूमकर जन जागृति का काम करना, आदि कार्यों में वे हमेशा संलग्न रहे।

गांधीजी के विचारों जन–जन तक पहुंचाने के लिए जगह–जगह सभाएँ की गई। धरने दिये गये। समय–समय पर इन्दौर व खरगोन के श्री खादीवाला, श्री मूलचंद उपाध्याय, श्री कृष्णकान्त व्यास, प्रो.यार्दे, श्री विश्वनाथ खोड़े आदि लोगों ने आकर लोगों को आज़ादी के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा दी।

बड़वानी नगर में श्री काशीनाथ त्रिवेदी, श्रीमती कलावती त्रिवेदी, श्री रामचंद्र कुमावत, आदि की जन्मस्थली थी। उन्होंने बड़वानी से ही उन्होंने स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध आज़ादी लड़ाई लड़ी। 1942 में ठीकरी के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री धन्नालाल महाजन ने आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी।

6. **ग्राम ओझर में आंदोलन का प्रसार –** बड़वानी से सेंधवा नागलवाड़ी मार्ग पर ओझर नाम का कस्बा आता है। ओझर सेंधवा से 22 कि.मी. दूर स्थित है। रियासतकालीन में नागलवाड़ी राजस्व केन्द्र था इसलिए ओझर होते हुए नागलवाड़ी आना–जाना अक्सर होता था। स्वतत्रता आंदोलन के समय ओझर के नारायण सोनी और नारायण चौबे ने सक्रिय भूमिका निभाई थी जिसमें विदेशी दुकानों पर धरना, प्रतिदिन रेलियाँ निकालकर लोगों को स्वदेश प्रेम की बातें सिखाना जैसे उल्लेखनीय कार्य इन्होंने किया।

प्रजामण्डल में सक्रिय योगदान और आन्दोलनकारियों के साथ पूरा–पूरा सम्पर्क नारायण चौबे ने बरकरार रखा। अपने अभिन्न मित्रों के साथ उन्होंने नवयुवकों देश प्रेम हेतु प्रेरित किया। नारायण चौबे भारत छोड़ो आंदोलन से संबंधित गतिविधियों को संचालित करने के कारण कभी अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे और कभी गिरफ्तार भी नहीं हुए।

2 अक्टूबर, 1942 तक नगर में प्रतिदिन सभा, प्रभातफेरी, सूत कातना, रामायण कथा तथा राष्ट्रीय भजनों का कार्यक्रम संचालित रहा।

7. **सेंधवा में आंदोलन का प्रसार –** बड़वानी जिले के सुप्रसिद्ध नगर सेंधवा के शीर्ष नेतृत्व के गिरफ्तार हो जाने पर सेंधवा के नवयुवकों ने आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ में ले ली, जिनमें बाबूलाल सोनी, श्री विश्वनाथ गुप्ता, श्री राजाराम सोनी, श्री सालिगराम कानूनगो, श्री मगनलाल गर्ग, श्री सीताराम सोनी, श्री विनायक जोशी आदि स्वतंत्रतावीरों ने श्रीकृष्ण वाचनालय में आयोजित सभा में आन्दोलन को और अधिक तीव्र करने का संकल्प किया। 10 अगस्त, 1942 को अनेक छात्रों ने हड़ताल की, जुलूस निकाले। प्रजा मण्डल के स्थानीय कार्यकर्ता और नागरिकों ने भी आंदोलन में भाग लिया। सार्वजनिक भवनों पर तिरंगा झण्डा फहराया। 19 अगस्त,

1942 को प्रजामण्डल का सत्याग्रह आंदोलन शुरू हुआ। इस समय अनेक नेताओं को बंदी बनाया गया।

स्थानीय पुलिस से दमन के अनेक काम शुरू किये। आन्दोलन से संबंधित साहित्य को अवैध मानते हुए उन्हें जप्त करना, प्रजामण्डल की साइक्लोस्टाइल प्रतियों को नगर की दीवारों पर चिपकाना, आदि गतिविधियाँ आंदोलनकारियों ने निरन्तर जारी रखी।

बड़वानी जिले में भारत छोड़ो आंदोलन का मूल्यांकन – इस तरह स्पष्ट है कि महात्मा गाँधी के प्रभाव से बड़वानी में भी भारत छोड़ो आंदोलन की शुरूआत हुई थी। सर्वप्रथम इस राष्ट्रीय जागृति में नत्थुप्रसाद पटेल, मंषाराम वर्मा, नर्मदा प्रसाद चतुर्वेदी, राघव लोचन पानवाला, महेन्द्र नागर, काषीनाथ त्रिवेदी आदि ने विश्वनाथ खोड़े के नेतृत्व में 1942 भारत छोड़ो आंदोलन प्रारंभ किया।

इन स्वतंत्रता सेनानियों ने सेंधवा व आसपास के ग्रामीणजनों को देषभक्ति की प्रेरणा दी। जगह–जगह आमसभाएँ करके जनता को आंदोलन के लिए प्रेरित किया। सेंधवा और आसपास के नवयुवकों ने संगठित कर मध्यरात्रि को टेलिग्राफ के तार काटकर संचार व्यवस्था को ठप्प करने का काम किया। श्री जमनालाल शाह, श्री किशन काले, श्री नागेश गुप्ता ने मिलकर नगर स्थित किले की प्राचीर पर राष्ट्रीय झण्ड फहराया। देश प्रेम की गाथाओं ने समूह गान कर जनता को राष्ट्रभक्ति के प्रति प्रेरित किया।

उपसंहार – इस तरह बड़वानी जिले में अनेक स्थानों पर भारत छोड़ो आंदोलन में क्रांतिकारियों ने भाग लिया। क्रांतिकारियों ने जगह–जगह आम सभाएँ की जिसमें जन आंदोलन आम जनता का आंदोलन बन गया। सभी क्रांतिकारियों ने जन जागृति के रूप में विदेशी वस्त्रों की होली जलाना, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना, स्वदेशी वस्तुओं का अधिकतम उपयोग करना आदि के लिए जनता को प्रेरित किया। नवयुवकों ने 'करो या मरो' जैसे नारों का जनता में प्रचार किया।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. महात्मा गांधी द्वारा श्री काशीनाथ त्रिवेदी को लिखे गये तीन पत्र।
2. महात्मा गांधी द्वारा श्रीमती कलावती काशीनाथ त्रिवेदी को लिखे गये तीन पत्र।
3. प्रजा मण्डी द्वारा बनाए गए कार्यक्रम की प्रति।
4. केन्द्रीय जेल इन्दौर के अधीक्षक का मध्यप्रदेश शासन के अंतर्गत स्वतंत्रता संग्राम सेनानी प्रमाण पत्र।
5. कलेक्टर कार्यालय, जिला बड़वानी में उपलब्ध स्वतंत्रता सेनानियों की सूची।
6. बेग डॉ. इस्मोईल अली, पश्चिम निमाड़ में स्वतंत्रता आंदोलन, शोध पुस्तक।
7. महाजन, विद्याधर, आधुनिक भारत का इतिहास, एस चन्द एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली, 1999.
8. मिश्र डॉ. सुरेश एवं श्रीवास्तव भगवान दास, मध्य प्रदेश के रणबंकुरे, स्वराज संस्थान संचालन, भोपाल, 2007.
9. सिंह डॉ. रघुवीर, मालवा में युगांतर।
10. ठाकुर डॉ. मंगला, बड़वानी राज्य का इतिहास प्रारंभ से लेकर 1947 तक, विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन को प्रस्तुत शोध प्रत्र।
11. पश्चिमी निमाड़ गजेटियर।
12. बड़वानी स्टेट गजेटियर।

****